राहु और केतु

राहु केतु छाया ग्रह है। यह एक दूसरे से 180 डिगरी पर गोचर करते है।

प्रथम भाव में राहु स्थित होने पर जातक की चेतनाशक्ति जाग्रत होती है। प्रभावयुक्त मुखाकृति मिलती है। ऐसे जातक को सिर-दर्द के रोग की संभावना रहती है। ऐसा जातक धोखा देने में चूकता नहीं। उसका कामुक होना भी संभव है। ऐसे जातक प्राय: बने-ठने रहते है। प्रथम भाव में शुभ राशि होने पर जातक अच्छा, प्रशंसक होते है। लग्न में मिथुन और कन्या राशि में अच्छा प्रभाव देता है।

द्वितीय भाव में राहु स्थित होने पर जातक को प्रभावकारी व्यक्तित्व प्रदान करता है। द्वितीय भाव में राहु अशुभ होने से जातक चिन्तायुक्त रहता है। पारिवारिक जीवन सुखद नहीं रहता। राहु अशुभ ग्रह की राशि में होने पर जातक को दरिद्री बनाता है। ऐसा जातक कोई बात गुप्त नहीं रख पाता। शत्रु-राशि में होने के कारण धन की क्षति और पारिवारिक कलेश रहता है।

तृतीय भाव में राहु स्थित होने पर जातक को वीर, सफल जीवन, अरामदायक जीवन प्रदान करने में सक्षम करता है। राहु अशुभ होने पर भाई एवं बहन का सुख प्राप्त नहीं होता।

चतुर्थ भाव में राहु उच्च होने पर जातक को पैतृक सम्पत्ति दिलवाता है। राहु चौथे भाव में शनि की राशि में, गुरु की राशि में, मंगल की राशि में और कर्क और तुला राशि में हो तो जातक किराये के मकान में कष्टों का सामना करता रहेगा। अपना मकान हो तो मानसिक शांति प्राप्त करता है।

पंचम भाव में राहु स्थित होने पर जातक को दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है। संतान हानि करता है, जातक को मन्दबुद्धी बनाता है। राहु अशुभ होने से शिक्षा में रुकावट होती है।